शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 61/2 जनवरी-मार्च 2023 400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

<u>हरियाणा</u>
डॉ॰ मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

<u>दिल्ली एन॰सी॰आर॰</u>
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम
डॉ॰ प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार
09557746346
डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

अनुक्रम

स्वाधीनता-आंदोलन के आलोक में हिंदी-पत्रकारिता/ **डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता** 19

किसान त्रासदी और 'फाँस'/ **नवीन राय** 26

थर्ड जेंडर पर बारह हिंदी उपन्यासों का परिचयात्मक अनुशीलन 32

पूजा विश्वकर्मा, डॉ॰ शैलेन्द्र कुमार ठाकुर, डॉ॰ सुधीर शर्मा 32

स्वतंत्र लेखन का अद्‌भुत दस्तावेज : 'हादसे' आत्मकथा/ **पूनम चौहान** 42

रीतिकाल में हिंदू मुस्लिम संस्कृति का समन्वय/ **प्रो॰ राखी उपाध्याय** 48

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानियों में राष्ट्रीय-सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण का प्रभाव/ **कनक नंदिनी** 56

हिंदी मीडिया और भाषा/ **डॉ॰ राकेशकुमार दुबे** 62

अवधी लोकगीतों में रस-व्यंजना/ **डॉ॰ सीमा गुप्ता** 69

सम्यक् आजीव बौद्ध आर्थिक व्यवस्था का मूलाधार : एक अध्ययन/ **शुभम महेश गजभिये** 75

कुसुम अंसल की कहानी में किन्नर जीवन/ **शिवानी, प्रो॰ सुचित्रा मलिक** 81

दीनदयाल उपाध्याय की पत्रकारिता और एकात्म मानववाद/ **शुभांगी** 85

केदारनाथ सिंह की कविताओं में व्यक्त भावबोध/ **श्रीमती शुभ्रा पांडेय** 89

कालगणना में सृष्टि रचना का महत्त्व/ **डॉ॰ सोनिया** 95

डॉ॰ दामोदर खड़से के उपन्यास 'बादल राग' में नारी-संघर्ष/ **स्वाति पाल, डॉ॰ शशिकला सालुंखे** 100

सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में जनसंपर्क विभाग द्वारा डिजिटल मीडिया के प्रयोग का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ 104

सुधाकर शुक्ला, डॉ॰ नरेंद्र कौशिक 104

हिंदी की समकालीन कहानियों में महानगरीय बोध का चित्रण/ **सुषमा माधवराव नरांजे** 109

द्विवेदीयुगीन उपन्यासों में ग्रामीण जनजीवन की अभिव्यक्ति/ **उपदीप कौर** 113

विवेकी राय की कहानियों में सामाजिक जीवन/ **वर्षा रानी, जयनारायण** 118

औरत ही औरत की आवाज/ **डॉ॰ विजय कुमार वर्मा** 121

हिंदीभाषा और मीडिया वैश्विक परिदृश्य/ **डॉ॰ विजयबहादुर त्रिपाठी** 125

क्रांतिकारी कवि और विद्रोही संत : महात्मा कबीर/ **डॉ॰ सुधाकर शेंडगे** 130

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई पहल/ **ज्ञानेश कुमार वर्मा** 138

जीवनकौशल शिक्षा तथा इसका महत्त्व/ **सत्यप्रकाश परमार** 143

 ISSN 0975-735X

स्वाधीनता-आंदोलन के आलोक में हिंदी-पत्रकारिता

डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता, सहायक प्रवक्ता, हिंदी
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर (हरियाणा)

'रणभेरी बज उठी वीरवर, पहनो केसरिया बाना।'

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारत देश समवेत रूप से अपने अतीत के मधु-तिक्त पलों का भी स्मरण कर रहा है। स्मृति की सामूहिक चेतना-धारा में अवगाहन करते हुए प्रत्येक भारतीय एक ओर गौरवांवित हो रहा है तो दूसरी ओर विषम वर्तमान का आकलन करते हुए भीतर-ही-भीतर गहरे असंतोष और अभाव की त्रासमयी वेदना का दंश भी अनुभव कर रहा है। गौरव और विक्षोभ के कारण अज्ञात नहीं है। हाँ, पीड़ा का स्वरूप निश्चित ही अभूतपूर्व और अश्रुतपूर्व है।

भारतीय चिंतनधारा स्वतंत्रता का स्तवन/वंदन करते हुए उसे जीवन का अपूर्व वरदान मानती रही है। शायद इसी विचारधारा ने पराधीनता के कटु-काल में स्वतंत्रता की तीव्र अकुलाहटमयी अभीप्सा बनकर भारतीय जनमानस को सामूहिक रूप से झकझोरते हुए एक कर दिया था। ऊर्जा का महासागर उद्वेलित हो उठा था और बरतानियाँ सरकार को, जिसके साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था, मिथकीय सृष्टि बन चुके विदेशी शासन के पोत को अपने ज्वार में डुबा दिया था। आज से 75 वर्ष पूर्व स्वातंत्र्य सूर्य के अभ्युदय से जन-जन का मन प्रभापूर्ण हो उठा था। आज स्वतंत्रता सपना नहीं यथार्थ है, कल्पना नहीं सत्य है। स्वाधीनता का दर्प हमारे राष्ट्रीय जीवन में सर्वत्र आलोकित है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् देश ने चतुर्दिक प्रगति की है। 'राष्ट्रों की जिजीविषा अपने अतीत के ऐश्वर्य एवं वैभव के साथ जब तक संबद्ध रहती है, और जब तक उनकी जीवनीशक्ति उसे ही अपने लिए अमृत प्रवाह का उद्‌गम मानकर युग के साथ चलने का सत्साहस करती है, तब तक उस राष्ट्र एवं जाति की आत्मा पाशमुक्त बनी रहती है। उसकी पार्थिव पराधीनता एक झंझावात या सामयिक प्रवाह की भाँति आकर चली जाती है। सांस्कृतिक अवगुंठन खुलते ही उसका अपना ही आलोक प्राप्त होने लगता है जिस पर चलकर वह जाति अपना भविष्य पुनः सुस्थिर कर लेती है।" विशेष रूप से भारत में इस संचेतना का संचार, त्रिकोणात्मक स्रोतों द्वारा 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ। संतों, महात्माओं, आचार्यों, कवियों एवं सुधारकों द्वारा जो प्रथम स्रोत बना उसने वर्तमान दयनीय दशा का बोध कराते हुए अतीत के दैदीप्यमान गौरव को पहचानने की दृष्टि दी।

दूसरा स्रोत पत्र-पत्रिकाओं का बना, 'जिन्होंने सावधान दिक्‌निर्देशक की भाँति गंतव्य का पथ दिखलाकर, साथ ही पाथेय प्रदान कर आगे बढ़ने के लिए डाँक लगाई। यह डाँक शक्तिप्रदायी कौमी आवाज बनकर कोने-कोने तक पहुँची और जन-जन में सांस्कृतिक जागरण स्वाधीनता का पर्याय बनकर समा गई–कन्याकुमारी से कश्मीर तक उत्सर्ग का तराना लहराने लगा। अदम्य और अपरंपार शक्ति पूँजीभूत होकर सामने आ गई, उसको किसी विलायती शासक के शस्त्र, कूटनीति

और प्रताड़ना का आतंक दबा नहीं सके। यह महती उपलब्धि भारत की पत्र-पत्रिकाओं की थी।'[2]

तीसरा स्रोत, नेतृत्व का बना, जिसने महान देश को नवजागरण-बेला की पहचान दी और देश को आगे बढ़ाने के लिए पथ-प्रदर्शित किया। देश की स्वाधीनता के इन तीनों घटकों का परस्पर पूरक रूप से जो सामंजस्य यहाँ तैयार हुआ; उसने भारत मही की स्वतंत्रता-प्राप्ति के पथ को विश्व के पराधीनों को स्वाधीन बनाने के लिए सशक्त आंदोलन रीति का सूत्रपात किया।

स्वाधीनता, स्वराष्ट्रोन्नति और सर्वोदय-भावना की त्रिवेणी पर हिंदी पत्रकारिता-गौरव का तीर्थ समादृत है। वस्तुतः राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों से संदर्भित सत्कार्य ही पत्रकारिता है, जिससे देशवासियों की नस-नस में स्वतंत्रता, समानता और विश्वबंधुत्व की भावना का संचार होता है। सद्विचारों की अभिव्यक्ति, पवित्र भावों की उद्भूति और न्यायोचित नैतिकता की पावन पीठिका ही पत्रकारिता का आधार है। इसलिए स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय, महर्षि अरविंद, विवेकानंद व गंगाधर तिलक तथा गोखले प्रभूति मनीषियों ने पत्रकारिता को स्वतंत्रता-प्राप्ति का सर्वाधिक सरस व सक्षम माध्यम उद्घोषित किया। 'वंदे मातरम्', 'कर्मयोगी', 'मराठा' और 'संध्या' जैसे अग्निवर्षी समाचार-पत्रों ने स्वातंत्र्य आंदोलन को प्रज्वलित किया। विवेकानंद के अग्रज भूपेंद्रनाथ दत्त की पत्रकारिता का मूल मंत्र था–

ज्वलुक ज्वलुक विप्लवहिन नगरे-नगरे।
भस्म होक् राक्षसेर स्वर्ण लंकापुरी।

जबकि 'केशरी' के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित इस चेतावनी ने 'सावधान, निश्चिंत होकर न विचरना, जब देश की प्रजा नींद से उठ जाएगी, तब तुम्हारी खैर नहीं' राष्ट्रभक्तों को स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ने हेतु प्रेरित किया। जिस कारण समस्त भारतीय जन-समुदाय ने 'दैनिक वर्तमान' के स्वर में स्वर मिलाते हुए जयघोष किया–

भारत के हम और हमारा भारत प्यारा।
स्वतंत्रता है जन्मसिद्ध अधिकार हमारा।

वास्तव में हिंदी पत्रकारिता का अभ्युदय स्वाभिमान के संचार, स्वदेश प्रेम के उदय एवं आंग्ल शासन के प्रबल प्रतिरोध स्वरूप स्वतंत्रता सेनानियों के चिंतन, मनन एवं स्वाधीनता-प्राप्ति के उद्देश्य से हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के सूत्रधार की भूमिका इतनी सहज नहीं थी। 'स्वराज्य' नामक पत्र के संपादक हेतु प्रकाशित विज्ञापन दृष्टव्य है–'स्वराज्य' अखबार के लिए एक संपादक चाहिए। जिसे दो जून सूखी रोटी, एक गिलास सादा पानी तथा हर संपादकीय पर दस वर्ष की सजा मिलेगी।' अँग्रेजों ने भारतीय जन-जीवन में आत्मदैन्य और हीनता की भावना भर दी थी। जिस कारण महात्मा गांधी का मानना था कि 'मेरा ख्याल है कि ऐसी कोई भी लड़ाई जिसका आधार आत्मबल हो, अखबार की सहायता बिना नहीं चलाई जा सकती।' जबकि पत्रकारिता के भीष्म पितामह पराड़कर का मानना था–'हमारा उद्देश्य अपने देश के लिए सब प्रकार से स्वातंत्र्य-उपार्जन है। हमें हर बात में स्वतंत्र होना चाहिए। हमारा लक्ष्य यह है कि हम अपने देश का गौरव बढ़ावें। अपने देशवासियों में स्वाभिमान का संचार करें, उनको ऐसा बनाएँ कि भारतीय होने का उन्हें संकोच नहीं बल्कि अभिमान हो। यह स्वाभिमान स्वतंत्रता देवी की उपासना करने से मिलता है।'[3]

वस्तुतः भारतीय पत्रकारिता की कहानी स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है। जहाँ दोनों की विकास-भूमियाँ एक-दूसरे की सहायक रही हैं। भारत में पत्र-पत्रिकाओं का आरंभ 29 जनवरी 1780 ई॰ से माना जा सकता है। इस समय जेम्स अगस्टस हिकी द्वारा

संपादित प्रथम पत्र 'हिकीज बंगाल गजट' या 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् क्रमश: नवंबर 1780 में 'इंडिया गैजेट', फरवरी 1784 में 'कैलकटा गैजेट', फरवरी 1785 में 'बंगाल जर्नल', 'ओरियंटल मैग्जीन' व मासिक पत्र 'कैलकटा एम्यूजमेंट' प्रकाशित एक ओर कलकत्ते से ही 6 वर्षों के अंदर 6 पत्र, एक मासिक और 5 साप्ताहिक पत्र निकालकर भारतीय पत्रकारिता की नींव डाली तो वहीं दूसरी इनके माध्यम से भारतीयों को जागरण का नवसंदेश सुनाया। 'सही अर्थों में देशी पत्रकारिता के जन्म का श्रेय भी राजा राममोहन राय को ही जाता है। उन्होंने दिसंबर 1821 ई॰ में 'संवाद कौमुदी' नामक बंगला साप्ताहिक का प्रकाशन किया।'[4]

भारतीय पत्रकारिता के विकास के साथ अँग्रेजों की दमननीति भी उग्र होती जा रही थी। बरतानिया सरकार की आत्यधिक अनुदारता के व्यवहार ने भारतीय मानस को इतना पीड़ित और उन्मथित कर दिया था कि गहरी प्रतिक्रिया पत्रों के माध्यम से स्वाभाविक थी। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर विदित है कि भारत में नवजागरण और आधुनिकता का प्रवेश बंगाल से ही हुआ। जिस कारण 19वीं शताब्दी में अनेक हिंदी भाषाभाषी यहाँ आए। जिनके मन में हिंदी समाज को आधुनिकता से संपृक्त करने की निरंतर हिलोरे उठ रही थीं। कलकत्ते की सहज-सुलभ आधुनिक सुविधाओं ने उन्हें भीतर ही भीतर और अधिक प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप जुगलकिशोर द्वारा हिंदी का प्रथम साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' (1826) निकाला।[5] हिंदी के प्रथम पत्र 'उदंत मार्तंड' का पहला अंक 30 मई 1826 को महत् इच्छा और उच्चादर्श को लेकर प्रकाशित हुआ। जिसमें संस्कृत भाषा में लिखा था–

दिवाकान्त कान्ति विनाध्वान्तमन्तं, नचाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञ लोक:।
समाचार सेवामृते ज्ञत्वमाप्तं, न शक्नोति तस्मातत्करोमीति यत्नतम्।

इसके पश्चात् बंगदूत (1829), प्रजामित्र'(1834), साम्यदंत मार्तंड (1840), समाचार सुधा वर्षण (1854), सार सुधानिधि (1879), उचितवक्ता (1880) मतवाला (1923) आदि पत्रों ने हिंदी के स्वरूप का निर्धारण करते हुए स्वराष्ट्र प्रेम की भावनाओं को घर-घर तक पहुँचाया। इन सभी पत्रों ने भारतीयों को दासता, दौर्बल्य एवं रूढ़िपूजा से मुक्ति दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ ही राजा राममोहन राय द्वारा 'हिंदू-हेराल्ड' जो कि बंगदूत नाम से प्रसिद्ध हुआ, श्री गोविंदनारायण दत्ते ने 'बनारस अखबार' (1845), श्री तारामोहन मिश्र द्वारा 'सुधाकर' (1850) और मुंशी सदासुख लाल द्वारा 'बुद्धिप्रकाश' (1852) पत्र निकाले गए। स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध नेता अजीमुल्ला खाँ ने 1857 में दिल्ली से 'पयामे आजादी' नामक राष्ट्रीय अखबार निकाला। सन् 1868 में काशी से बाबू हरिश्चंद्र ने 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैग्जीन' (1873) व 'बालबोधिनी' पत्रिका निकाली। वे पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने 'नेशनेलिटी' का प्रयोग किया। देश की दुर्दशा को देखकर वे अत्यंत व्यथित थे। जिसका प्रमाण उनकी पंक्तियों से मिलता है–

अब जहँ देखहु तहँ दु:खहु तहँ दु:खहि दु:ख दिखाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा ने देखी जाई।

पूर्वी उत्तर भारत भारतीय राष्ट्रीयता के उन्नायकों की भूमि है। बाबू कुँअरसिंह, शहीद मंगल पांडेय, चंद्रशेखर आजाद, मन्मथनाथ गुप्त, बिस्मिल आदि अगणित क्रांतिकारियों की यही कर्मभूमि रही है। स्वतंत्रता के इन सभी सेनानियों ने समवेत् स्वर से शहीद अशफाक उल्ला खाँ की आकांक्षा का उद्घोष किया–

कुछ आरजू नहीं है/ है आरजू तो यह है,

ISSN 0975-735X

रख दे कोई जरा सी/ खाके वतन कफन में।

साथ ही आजमगढ़ के शिवली नुमानी साहब के साथ गौंराग प्रभुओं से प्रश्न किया–

तुम्हीं बतला दो ऐ तहजीव इंसानी के उस्तादों।
जब जुल्माराइयाँ कब तक?
यह हम अंग्रेजियाँ कब तक?
* * *
यह माना तुमको शिकवा है फलक से खुश्क साली का,
हम अपने खून से सींचे तुम्हारी खेतियाँ कब तक?

इसी राष्ट्रप्रेम व प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर पूर्वांचल के पत्रकारों ने अकबर इलाहाबादी के जयघोष को शिरोधार्य किया–

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।

'बरातानियाँ सरकार के शोषण, दमन तथा सत्ता हड़पने की कुत्सित नीति के कारण भारतीय राजाओं और नागरिकों में क्षोभ फैल गया। सन् 1857 में रानी लक्ष्मीबाई व अवध के नवाब के साथ हुए दुर्व्यवहार के कारण मुगल सम्राट बहादुरशाह की पताका के नीचे क्रांति का बिगुल बज रहा था।'[6] 'पयामे आजादी' पत्र के माध्यम से श्री वीरभद्र प्रताप ने पूर्वी जिलों की समस्याएँ के अंतर्गत लिखा–'... लगभग सभी पूर्वी जिले बागी हो गए थे और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में यहाँ के राजाओं और ताल्लुकेदारों ने ही नहीं, जनता ने भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी तलवारें निकालीं। जिस बर्बरतापूर्वक जनता का दमन किया गया और जनता ने उस दमन का जिस तरह मुकाबला किया वह भी अपने में एक इतिहास है। इसकी प्रशंसा उस समय के अँग्रेज कलेक्टरों ने भी अपने संस्मरणों में की है।'[7]

सन् 1877 में बालकृष्ण भट्ट ने प्रयाग से सिद्धांत व उद्देश्य का प्रतिरूप 'हिंदी प्रदीप' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया।

शुभ सरस देश सनेह पूरित, प्रगट है आनंद भरे।
नीच दुसह दुर्जन वायु सौ मणिदीप सम थिर नहीं टरै।

राष्ट्रीय चेतना के विकास की दृष्टि से 'हिंदी प्रदीप' का प्रकाशन एक क्रांतिकारी घटना है। सन् 1913 में महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका में हुई गिरफ्तारी का समाचार गांधी के चित्र के साथ प्रकाशित करते हुए 'हिंदी प्रदीप' में लिखा–

दीन है किंतु रखते मान हैं
कब माँगते किसी से दान हैं
न्याय से चाहते अपना अधिकार हैं
भव्य भारत वर्ष की संतान है।

17 मई, 1878 में कलकत्ता से 'भारत मित्र', 13 अप्रैल 1879 में 'सारसुधानिधि' पत्र निकले। पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र ने 'उचित वक्ता' (7 अगस्त, 1887), प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' (1883), बाबूराम कृष्णवर्मा ने 'भारत जीवन' (3 मार्च, 1884 ई०), राजा रामपाल सिंह ने लंदन से 'हिंदुस्तान' (1885 ई०), पं० रामगुलाम अवस्थी ने जबलपुर से 'शुभचिंतक' (1887 ई०), पं० अमृतलाल चक्रवर्ती ने 'हिंदी-बंगभाषी' (1890 ई०), बाबू देवकीनंदन खत्री ने 'साहित्य सुधानिधि'

(1 जनवरी 1883 ई०) तथा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' (1896 ई०) प्रकाशित की गई और सन् 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका प्रकाशित हुई। हिंदी पत्रकारिता की गौरवगंगा यदि 'सरस्वती' कही जाए तो महावीरप्रसाद द्विवेदी जी को भगीरथ संपादक के अतिरिक्त और क्या कहेंगे?

सन् 1907 में डॉ० बालकृष्ण शिवराम मुंजे ने 'हिंदी-केसरी' (1907 ई०) तथा पं० गणेशशंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' (सन् 1910 ई०) प्रकाशित किया। 'प्रताप' नामक पत्र का कार्यालय तो देश पर मर मिटने वाले नवयुवकों का प्रेरणा एवं प्रशिक्षण केंद्र बन गया था। सन् 1907 में 'विश्वमित्र' का प्रकाशन हुआ यह एक तेजस्वी पत्र था। 5 सितंबर, 1920 को शिवप्रसाद गुप्त ने दैनिक 'आज' तथा सन् 1923 में निराला जी के संपादकत्व में 'मतवाला' का प्रकाशन हुआ। 'हिंदी पंच' (1926 ई०) 'सेनापति' (1920 ई०) में प्रकाशित हुए। सन् 1928 में श्री रामानंद चट्टोपाध्याय ने 'विशाल-भारत' को जन्म दिया। सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी यशपाल जी ने इसी समय जेल से छूटते ही 'विप्लव' नामक साहित्यिक पत्रिका का श्रीगणेश किया। सन् 1907 में प्रकाशित 'नृसिंह' मासिक पत्र उग्र राष्ट्रवाद का समर्थक व शुद्ध राजनीतिक पत्र था। सन् 1908 ई० में मालवीय जी ने प्रयाग से क्रांति का अगुवा 'अभ्युदय' नामक साहित्यिक पत्र निकाला। गांधी जी स्वयं सिद्धहस्त पत्रकार थे। वे स्वयं 'यंग इंडिया', 'नव-जीवन' तथा 'हरिजन' तीन पत्र चलाते थे। 'कर्मयोगी' पत्र के संपादकीयों में अँग्रेजों के विरुद्ध आग बरसती थी। यह पत्र राष्ट्रीय भावना की धुरी पर घूमता रहा। इससे प्रभावित होकर आगरकर जी ने राष्ट्रीय पत्र निरंतर 'स्वराज्य' निकाला। जबकि प्रेमचंद जी द्वारा संपादित 'हंस' एक क्रांतिकारी पत्र था।

गोरखपुर जनपद ने हिंदी साप्ताहिक 'स्वदेश' के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को खुली चुनौती दी। 'स्वदेश' का प्रकाशन उस समय हुआ जब हिंदी पत्रों का कोई नाम लेने वाला नहीं था। पराधीन भारत में देशवासियों में राष्ट्रप्रेम जाग्रत करने हेतु 'स्वदेश' ने अपने मूल सिद्धांत को सभी अंकों के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित किया–

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

द्विवेदी जी ने हर संपादकीय टिप्पणी का प्रारंभ इन पंक्तियों से किया–

स्वार्थ लाभ के लिए आत्मबलि हम न करेंगे।
जिस स्वदेश में जिए, उसी पर सदा मरेंगे।

गीतांजलि' के मुखपृष्ठ पर भी यही ख्वाहिश अंकित थी कि

सूख जाये न कहीं पौधा यह आजादी का,
खून से अपने इसे इसलिए तर करते हैं।

तत्कालीन पत्रकारिता का मूल स्वर स्वदेश प्रेम था। 'ज्ञान-शक्ति' ने स्वदेश प्रेम की भावना का प्रसार पूर्वी उत्तर प्रदेश में किया। राष्ट्र की पतित अवस्था पर पश्चाताप करते हुए 'मूनिस' ने लिखा–

ऐ कौम देख तो तेरी हालत को क्या हुआ?
हैरत में आइना है कि सूरत को क्या हुआ?
हमको जलील-सुस्त व मजबूर देखकर,
'परताप' कह रहा है, हयैयत को क्या हुआ?

पराड़कर जी ने सन् 1930 में 'रणभेरी' में लिखा–ऐसा कोई बड़ा शहर नहीं रह गया है, जहाँ से एक भी 'रणभेरी' जैसा परचा न निकलता हो, शुरू में वहाँ सिर्फ 'काँग्रेस बुलेटिन' निकलती थी। फिर रिवोल्ट रिवोल्यूशन (विप्लूव) 'बेलवो', 'फितूर' (द्रोह), 'गदर', 'बगावत' आदि निकलने लगी। दमन से द्रोह बढ़ता है, इसका यह अच्छा सबूत है पर नौकरशाही के गोबर-भरे गंदे दिमाग में इतनी समझ कहाँ? वह तो शासन का एक ही अस्त्र जानती है–'बंदूक'।

शहीद मंगल पांडेय के स्वर में स्वर मिलाकर यहाँ के निवासियों ने अजीमुल्ला खाँ के 'पयामे आजादी' का गीत गाया–

आया फिरंगी दूर से ऐसा मंतर मारा।
लूटा दोनों हाथों से प्यारा वतन हमारा।
आज शहीदों ने तुमको अहले वतन ललकारा।
तोड़ो! गुलामी की जंजीरे बरसाओ अंगारा।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री राजाराम अचल के संपादकत्व में 'विजय' पाक्षिक का प्रकाशन 26 जनवरी, 1938 से प्रारंभ हुआ, जिसके मुखपृष्ठ पर ये पंक्तियाँ अंकित थीं–

अभिलाषा तेरी किसे नहीं, कौन जोहता राह नहीं
क्या कोई भी ऐसा जग में है, जिसे विजय की चाह नहीं?

इसके साथ ही–

'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'–तिलक

'मैं तो अपने देश में रामराज्य लाना चाहता हूँ। मेरे स्वराज्य का यही अर्थ है।'–महात्मा गांधी

विजय की सफलता के लिए मेरी शुभ कामना है, आशा है विजय काँग्रेस का संदेश जिले के कोने-कोने में पहुँचाने का प्रयत्न करेगा।'–जवाहरलाल नेहरू

लेकर पूर्ण स्वराज्य स्वप्न अपना पहचाने।
आजादी या मौत यही प्रण मन में ठाने। –अंचल

उक्त सभी अंश पाक्षिक पत्र की तेजस्विता के द्योतक हैं। पत्र की कामना प्रथम अंक में ही द्रष्टव्य है–'माँ स्वाधीनते! अभी तू कितनी दूर है। तुम तक पहुँचने में अभी कितने दिन लगेंगे? आजादी की देवी अब हम बेदार हो चुके हैं। अब हमें कोई पराधीन नहीं रख सकता।'

अस्तु, स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रों तथा संपादकों की भूमिका अविस्मरणीय है। पत्रकारिता राष्ट्रीयता की ऐसी डायरी है, जो पाठकों को परतंत्रता से मुक्ति दिलाने हेतु एक दृष्टि प्रदान करती है। सन् 1920 से 1947 तक स्वमतंत्रता संग्राम के उत्कर्ष का काल था। जहाँ ब्रिटिश साम्राज्यवाद का दमन-चक्र जितना क्रूर होता चला गया उसी अनुपात में स्वाधीनता आंदोलन का संग्राम भी उतना ही प्रखर होता गया। संघर्ष को प्रभावी बनाने के लिए कठोर बंदिशें व नियंत्रण रहने पर भी क्रांतिकारी गुप्त पत्रों का प्रकाशन करते रहे। जिनमें 'बंवडर', 'बोल दे धावा', 'रणभेरी', 'शंखनाद', 'चंद्रिका', 'रणडंका' और 'ज्वालामुखी' जैसे उग्र पत्रों ने आंग्ल शासकों को खुलकर चुनौती देते हुए स्पष्ट आह्वान किया–'हम भीख माँगकर, भारत सरकार की खुशामद कर अथवा उससे न्याय की दुहाई देकर स्वतंत्रता नहीं पा सकते। यदि हम स्वतंत्र हो सकते हैं तो आत्मविश्वास और शक्ति से ही। इसके लिए हमें बलिदान, त्याग और तपस्या करनी पड़ेगी। स्वतंत्रता की बलिवेदी पर लाखों और करोड़ों की बलि चढ़ानी होगी।' इसी के फलस्वरूप बस्ती से प्रकाशित होनेवाले 'विजय' पाक्षिक पत्र ने घोषित किया कि–

ISSN 0975-735X

लेकर पूर्ण स्वराज्य स्वतंत्र अपना पहचानें।
आजादी या मौत यही प्रण मन में ठानें।

आजादी के इसी स्वर में स्वर मिलाते हुए 'समय' (जौनपुर), 'संदेश' (आजमगढ़) और 'कवि' जैसे पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम को गत्वरता प्रदान की। यह सभी पत्र गांधी की वैचारिक क्रांति के अग्रदूत बने। 15 अगस्त 1947 ई॰ को भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य सदा-सदा के लिए अस्त हुआ और यूनियन जैक के स्थान पर भारतीय तिरंगा लहराने लगा। इस प्रकार पराधीन भारत में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साथ आत्माभिमान और सम्मान की भावना जाग्रत करने हेतु पत्रों ने अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया। जिन्होंने अन्याय, अज्ञान, प्रपीड़न और प्रवंचना को निडरता से प्रकाशित करते हुए सृजनात्मक, समन्वयवादी व सुसंस्कारित राष्ट्रोत्थान हेतु वैचारिक यज्ञ की उज्ज्वल यशोगाथा का अभिषेक लिखा।

संदर्भ

1. डॉ॰ अर्जुन तिवारी, स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1982, आमुख, पृ॰ 6-7
2. वही, पृ॰ 8
3. 'आज' का अग्रलेख, 5 सितंबर, 1920 ई॰
4. बंगला साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' के आदिसंचालक ताराचंद दत्ता थे और संपादन भवानीचरण वंद्योपाध्याय करते थे। बाद में इसे राजा साहब ने ले लिया था। -श्री सुकुमार मित्रा : द न्यूजपेपर प्रेस -स्ट्डीज इन द बेंगाल रेनेसाँ।
5. डॉ॰ कृष्णबिहारी मिश्र, हिंदी पत्रकारिता, जातीय चेतना और खड़ीबोली साहित्य की निर्माणभूमि, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण आठवाँ, 2011, पृ॰ 44
6. वही
7. डॉ॰ अर्जुन तिवारी, स्वदतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1982, आमुख, पृ॰ 12
8. पयामे-आजादी : प्रथम अंक, 1857
9. जीवन : 20 मई 1935 ई॰

Dr.Laxmi Gupta
#1680 ,Sec-17 Huda, Yamunanagar-135001
Mob. 7988017085
drlaxmigupta111@gmail.com